8

माता-पिता के सात कर्ज जो हमारे ऊपर हैं

वचन पाठः इफिसियों 6:1-4

इस शृंखला में हमने साधारण रूप में घर पर अध्ययन किया है। हमने पति/पत्नी के सम्बन्ध पर चर्चा की है। हमने माता-पिता की ज़िम्मेदारी पर ज़ोर देते हुए माता-पिता/बच्चे के सम्बन्ध पर बातें की हैं। इस अन्तिम पाठ में मैं बच्चे की ज़िम्मेदारियों पर बात करना चाहता हूं। आइए "माता-पिता के सात कर्ज, जो हमारे ऊपर हैं" को देखते हैं।[1]

कइयों का कहना है कि उन्होंने अपने माता-पिता का कुछ देना नहीं है। कुछ साल पहले एक फिल्म में एक पिता ने ज़ोर दिया कि उसे कुछ आदर मिलने वाला है। उसके बड़े हो रहे बेटे ने उत्तर दिया कि उसने अपने पिता को कुछ नहीं देना है। उसने कहा कि उसने उसे संसार में लाने के लिए नहीं कहा था और उसके संसार में आने का ज़िम्मेदार उसका पिता है, इसलिए उल्टे पिता ही उसका देनदार है।

बाइबली परिप्रेक्ष्य एकपक्षीय नहीं है। यह इस बात पर तो ज़ोर देता है कि माता-पिता अपने बच्चों के बहुत कर्जदार हैं, क्योंकि इस संसार में उन्हें लाने के लिए ज़िम्मेदार वही *हैं,* परन्तु यह इस बात पर भी ज़ोर देती है कि बच्चों का भी अपने माता-पिता के प्रति कुछ फर्ज है। यदि माता-पिता की ज़िम्मेदारी नहीं होती तो बच्चा जीवित न रहता। जीवन का दान एक विशेष दान है।

इसी कारण इफिसियों 6:1-4 माता-पिता *और* बच्चों *दोनों* को चुनौती देता है:

> हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है। अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है)। कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे। और हे बच्चे वालो अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चितावनी देते हुए, उन का पालन-पोषण करो।

कई माता-पिता इस प्रकार रहते हैं जैसे केवल उनके बच्चों की ज़िम्मेदारी है। कई बच्चों का जीवन ऐसा होता है, जैसे ज़िम्मेदारियां उनके माता-पिता पर ही हैं। दोनों में से कोई भी व्यवहार सही नहीं है। हम पहले ही देख चुके हैं कि अपने बच्चों को संभालने और सिखाने

की ज़िम्मेदारी माता-पिता की कैसे है। बदले में हम अपने माता-पिता को क्या दे सकते हैं ?[2]

हमारा धन्यवाद

पौलुस ने लोगों के परमेश्वर से दूर होने की बात की तो उसने यह संकेत भी जोड़ा कि वे कैसे अभक्तिपूर्ण हो गए थे: ''... उन्होंने ... धन्यवाद न किया'' (रोमियों 1:21)।

हमें यदि किसी के आभारी होना चाहिए तो वे हमारे माता-पिता हैं। मैं पहले ही बता चुका हूं कि उन्होंने हमें जीवन का वरदान दिया है। उन्होंने हम से प्रेम भी किया है और हमें संभाला भी है।[3]

बरगन ईवंस ने एक बार पेन स्टेट यूनिवर्सिटी की स्नातक होने वाली कक्षा को सम्बोधित किया था। उसने इस बात को समझा कि वह उन जवानों से बात कर रहा था, जिन्होंने अपने से पिछली पीढ़ी की प्राप्ति के लिए धन्यवाद नहीं किया था यानी उन जवानों से जो संसार में बुराइयों का दोष अपने माता-पिता पर लगाते हैं। अपने भाषण में उसने ध्यान दिलाया कि उनके माता-पिता की पीढ़ी ने मनुष्य की आयु सीमा को बढ़ाया, काम का बोझ कम करने के बावजूद प्रति व्यक्ति उपज बढ़ाई और हमें पहले से बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं।[4] उसने उनके माता-पिता की पीढ़ी और उससे पहले की पीढ़ी द्वारा किए गए बलिदानों की बात की और यह भी कि उन पीढ़ियों ने कैसे यह निश्चय किया था कि उनके बच्चों का जीवन उनसे बेहतर होना चाहिए।

उसने अपने सुनने वालों को बताया, ''उन्होंने आपको बेहतरीन चीज़ें दीं, यही कारण है कि आप देश में सबसे लम्बे, सबसे स्वस्थ, सबसे चमकदार चेहरे वाले और सम्भवतया अपनी पीढ़ी के सबसे सुन्दर दिखने वाले लोग हैं।'' उसने उन्हें याद दिलाया कि अपने माता-पिता के प्रयासों के कारण ही, ''आप कम घण्टे काम करके, अधिक सीख सकते हैं, अधिक समय आराम कर सकते हैं, अधिक दूर तक सफ़र कर सकते हैं और आपके पास जीवन की इच्छाएं पूरी करने का अवसर हैं।''

उसने इस विचार के साथ समाप्त किया: ''यदि आपकी पीढ़ी उतनी ही उन्नति कर सकती है जितनी इन दो पीढ़ियों ने की है तो आप पृथ्वी की शेष रह गई बीमारियों को मिटा सकते हैं। ... परन्तु यह आसान नहीं है और नकारात्मक सोच रखकर तो आप ऐसा बिलकुल नहीं कर सकते और न ही उसे कम करके या उसकी बेकद्री करके कर सकते हैं। ऐसा आप कठिन परिश्रम, दीनता और मनुष्यजाति में विश्वास रखकर कर सकते हैं।''[5]

हमारे माता-पिता ने हमें सिद्ध संसार में नहीं लाया था। आखिर यह संसार पाप से दूषित है (उत्पत्ति 3:17, 18)। परन्तु यदि पूरी पृथ्वी को देखें तो अनन्तकाल की तैयारी करने के लिए रहने की हर जगह बुरी नहीं है। पिछली पीढ़ियों को कुछ तो श्रेय देना हमारा फर्ज बनता ही है।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार लोगों की मूल आवश्यकताओं में से एक यह अहसास होने की आवश्यकता है कि उनमें मूल्य है, अर्थात धन्यवाद किए जाने की आवश्यकता है।

बाइबल इस निष्कर्ष से असहमत नहीं है।[6] क्या आप अपने माता-पिता का धन्यवाद करते हैं? क्या आप उस सबके लिए जो उन्होंने आपके लिए किया है, धन्यवाद करते हैं? क्या आप उन्हें *बताते* हैं कि आप उनके आभारी हैं?

हमारी ओर से सम्मान

हमें अपने माता-पिता का आदर करना आवश्यक है। इसलिए नहीं कि वे हमेशा सही होते हैं, बल्कि इसलिए कि वे हमारे माता-पिता हैं। इस मूल सच्चाई पर बहुत पहले दी गई दस आज्ञाओं में ज़ोर दिया गया था: "तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन तक रहने पाए" (निर्गमन 20:12)। "आदर" शब्द में सम्मान और वह सब कुछ शामिल है, जो इसके साथ जाता है। लैव्यव्यवस्था 19:3 में इस आज्ञा के दोहराए जाने के समय हम पढ़ते हैं कि "तुम अपनी-अपनी माता और अपने-अपने पिता का *भय मानना*।"[7]

इस आज्ञा में आज्ञाकारी बच्चों के लिए अद्‌भुत आशीष थी कि "तू बहुत दिन तक रहने पाए।" उनके दिन "बहुत दिन" इसलिए होने थे क्योंकि अवज्ञा के कारण उन्हें मारा नहीं जाना था (जैसा कि हम थोड़ी देर बाद देखेंगे)। उनके दिन इसलिए भी बहुत होने थे क्योंकि उन्होंने अपना जीवनकाल बढ़ाने वाली अच्छी आदतें सीखनी थीं। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि उनके दिन इसलिए बहुत होने थे, क्योंकि वे परमेश्वर की आज्ञा मान रहे थे और परमेश्वर ने उन्हें आशीष देनी थी।

बच्चों को अपने माता-पिता का आदर करने की मूल आज्ञा व्यवस्थाविवरण 5:16 में दोहराकर उसे विस्तार दिया गया था:

> अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है; जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन तक रहने पाए, और तेरा भला हो।

उस अवसर पर मूसा ने इस बात पर ज़ोर दिया कि यह आज्ञा सीधे परमेश्वर की ओर से है। इसके साथ जुड़ी आशीष को भी विस्तार दिया गया था। सामान्य प्रतिज्ञा यह थी "और तेरा भला हो।" बच्चे के लिए जो घर में आदर करना सीखता है जीवन "अच्छा चलना" था: उसने एक अच्छा छात्र, अच्छा जीवन साथी, अच्छा माता या पिता, और अच्छा कर्मचारी या नियोक्ता होना था।

व्यवस्थाविवरण 27 में, इस्राएलियों के प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करने पर वाचा को नये सिरे से देने के लिए मूसा द्वारा निर्देश दिए जाने के समय, इसी आज्ञा को शामिल किया गया था, परन्तु नकारात्मक रूप में: "शापित हो वह जो अपने पिता-माता को तुच्छ जाने"[8] (आयत 16क)।

नये नियम में, जब धनी जवान हाकिम यीशु के पास यह पूछने के लिए आया कि वह

अनन्त जीवन में प्रवेश करने के लिए क्या करे तो यीशु ने "अपने पिता और अपनी माता का आदर करना" (लूका 18:20) सहित दस आज्ञाओं में से कई आज्ञाएं दोहरा दीं। वह जवान यह कह पाया कि "मैं तो इन सबको लड़कपन ही से मानता आया हूं" (आयत 21)।

माता-पिता का सम्मान ऐसी मूल आवश्यकता है कि यह आज्ञा यीशु के नये नियम के भाग के रूप में अक्षर-अक्षर दोहराई गई है: "अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है) कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे" (इफिसियों 6:2, 3)।

हम अपने माता-पिता के प्रति सम्मान कैसे दिखा सकते हैं?

(1) हम यह सम्मान (या सम्मान की कमी) अपने माता-पिता के साथ बात करने के ढंग से दिखाते हैं। यशायाह 45:10 में हमें यह अनोखी आयत मिलती है: "हाय उस पर जो अपने पिता से कहे, तू क्या जन्माता है? और मां से कहे, तू किस की माता है?" दि लिविंग बाइबल में इसे इस प्रकार लिखा गया है: "हाय उस बच्चे पर, जो जन्म लेने पर अपने पिता और माता पर चीखता है, 'तुमने मुझे पैदा क्यों किया? तुम कोई अच्छी चीज़ नहीं कर सकते थे?'" संदर्भ में लेखक अपने सृष्टिकर्त्ता के प्रति मनुष्य के व्यवहार की बात कर रहा था। यह तो स्पष्ट रूप से अपमानपूर्ण जवान व्यक्ति की स्पष्ट तस्वीर है, जो हर बात के लिए अपने माता-पिता को कोसता है।

पुराने नियम में, अपने पिता या माता को कोसने वाले को पथराव करके मार डालने की आज्ञा थी (निर्गमन 21:17; लैव्यव्यवस्था 20:9; नीतिवचन 20:20; नीतिवचन 30:11 भी देखें)। यदि आज इस आज्ञा को कुछ जगहों में लागू किया जाए तो संसार की जनसंख्या बहुत कम हो जाएगी।

(2) हम अपने माता-पिता *की* बात करने के ढंग से भी उनके प्रति सम्मान (या सम्मान की कमी) दिखाते हैं। जब हाम ने अपने पिता की तरस योग्य स्थिति देखी[9] तो उसे शाप दिया गया था (उत्पत्ति 9:20-25)।

(3) हम अपने काम करने के ढंग से भी सम्मान (या सम्मान की कमी) दिखाते हैं: अपमानपूर्ण होने के लिए शब्दों की आवश्यकता नहीं है। नीतिवचन 30:17 यह कहते हुए कि "जिस आंख से कोई अपने पिता पर अनादर की दृष्टि करे, और अपमान के साथ अपनी माता की आज्ञा न माने" अपने माता-पिता का अनादर करने वाले की स्थिति बयान करता है, "उस आंख को तराई के कौवे खोद-खोद कर निकालेंगे और उकाब के बच्चे खा डालेंगे।" इसको पढ़कर मैं किसी नव युवा को फटकार पड़ने पर विरोध करते कि "मैंने क्या *कहा* है?" और माता-पिता को यह उत्तर देते देख सकता हूं, "तू ने कहा कुछ नहीं है। तेरी आंखों में ये बातें दिखाई दे रही हैं।"

पुराने नियम में अपने माता-पिता से किसी भी प्रकार का दुर्व्यवहार करने वाला बच्चा एक अपमान और लज्जा का कारण होता था (नीतिवचन 19:26)। अपने माता-पिता को पीटने वाले बच्चे का दण्ड मृत्यु था (निर्गमन 21:15)। बच्चों द्वारा अपने माता-पिता के प्रति सम्मान या सम्मान की कमी के ढंगों की हम लम्बी सूची बना सकते हैं।

मीका नबी ने जब बताया कि उसके समय की स्थिति कितनी बुरी थी तो, उसने कहा, ''क्योंकि पुत्र [अपने] पिता का अपमान करता, और बेटी माता के, और बहू सास के विरुद्ध उठती है'' (मीका 7:6)। हमें अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए।

हमारी आज्ञाकारिता

अपने माता-पिता की आज्ञा मानने का सम्बन्ध उनका आदर करने की चुनौती से जुड़ा है। अपने माता-पिता की आज्ञा मानने की बच्चों की असफलता सदा रहने वाली समस्या है। जब पौलुस अपने समय के पतन की बात कर रहा था तो उसने यह लक्षण भी इसमें जोड़े: ''डींग मार, अभिमानी, ... माता-पिता की आज्ञा टालने वाले।''

कुछ साल पहले एलिएनर रूज़वेल्ट[10] ने अपने दैनिक समाचार पत्र में स्तम्भ लिखा, ''हम में से कइयों के लिए, जो अपने संसार की स्थिति पर और विशेषकर अपने जवानों की स्थिति पर चिन्तित हैं, यह याद रखना प्रोत्साहित करने वाला हो सकता है कि आज की समस्याएं कोई नई नहीं हैं।''[11] फिर उसने यह कथन दोहराया: ''इन अन्तिम दिनों में हमारी पृथ्वी पतित हो गई है; घूस और भ्रष्टाचार आम हो गए हैं; बच्चे अब अपने माता-पिता का कहा नहीं मानते; संसार का अन्त स्पष्ट रूप से निकट लग रहा है।''[12] फिर उसने लिखा कि ये शब्द 2800 ई.पू. में अश्शूर में पत्थर की पट्टी पर लिखे मिले हैं।

श्रीमती रूज़वेल्ट ने एक और उद्धरण दिया: ''अब बच्चों को विलासिता अच्छी लगती है; वे बिगड़े हुए हैं, अधिकार को नहीं मानते। बच्चे अब अपने घर के सेवक नहीं रह गए, वे तो तानाशाह हो गए हैं। वे अपने माता-पिता के उलट चलते हैं, कंपनी के सामने दांत कटकटाते हैं, मेज़ पर भोजन खाते समय आवाज़ें करते हैं, अपने शिक्षकों को चिढ़ाते हैं।''[13] ये शब्द मसीह से तीन सदियों पहले, प्राचीन यूनान के सुकरात से उद्धृत करते हुए प्लैटो ने लिखे थे।

इफिसियों 6:1 की शिक्षा बहुत ही सरल और स्पष्ट है: ''हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है।'' क्या हमें अपने माता-पिता की आज्ञा इसलिए माननी आवश्यक है क्योंकि वे हमेशा सही होते हैं? नहीं, इसलिए क्योंकि ''*यह* सही है।'' आज्ञाकारी होना जीने का सही ढंग है। ''प्रभु में'' वाक्यांश प्रभु के साथ आपके सम्बन्ध, आपके मसीही होने के साथ जुड़ा है। यदि आप और आपके माता-पिता दोनों मसीही हैं, तो आपका सम्बन्ध दोगुना विशेष बन जाता है। यदि आपके माता-पिता मसीही नहीं है तो भी आपको उनकी आज्ञा माननी चाहिए, क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा है। ''यही सही है।''

कुलुस्सियों 3:20 में पौलुस ने एक या दो और विचार डाले: ''हे बालको, सब बातों में अपने-अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करो, क्योंकि प्रभु इस से प्रसन्न होता है।'' ''सब बातों में'' का अर्थ है कि ''हर बात में जो सीधे तौर पर परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध न जाती हो।'' (देखें प्रेरितों 5:29.) पौलुस ने कहा कि जो बच्चा ऐसा करता है, वह परमेश्वर को प्रसन्न करता है। यीशु परमेश्वर का अपना पुत्र था, परन्तु नवयुवक के रूप में

वह यूसुफ और मरियम के "वश में रहा" (लूका 2:51)।

अधिकतर लोग छोटे बच्चों को अगुआई देने की आवश्यकता समझते हैं। कुछ ही बच्चे हो सकता है कि यदि उन्हें व्यस्त राजमार्गों पर भटकने या आग से खेलने से न बचाए जाए तो वे वयस्कपन में पहुंच सकते हैं। नवयुवकों को हो सकता है कि इस बात की समझ न हो कि अभी भी उन्हें अगुआई की आवश्यकता है, परन्तु उन्हें आवश्यकता रहती है।

माता-पिता की आज्ञा मानने का क्या अर्थ है? क्या इसका अर्थ यह है कि बच्चा बार-बार शिकायत किए जाने पर वैसा ही करता है जैसा उसके माता-पिता कहते हैं? सच्ची आज्ञाकारिता का अर्थ है कि बच्चा तुरन्त, आनन्द से बल्कि पहले से तैयार विनतियों का उत्तर देता है। परमेश्वर यही चाहता है और ऐसा व्यवहार किसी माता-पिता आनन्द का कारण है।

परमेश्वर को बच्चों के अपने माता-पिता की आज्ञा मानने का ध्यान है, केवल किसी व्यक्ति के घर पर पड़ने वाले प्रभाव के कारण ही नही, बल्कि इससे पूरे समाज पर पड़ने वाले प्रभाव के कारण भी। एडवर्ड एल. कास्ट ने लिखा है:

> लम्बी अवधि के लिए माता-पिता पर निर्भर रहकर और आज्ञा मानकर बच्चे जो सबसे महत्वपूर्ण बातें सीखते हैं उनमें से एक यह है कि उन्हें यह सीखना आवश्यक है और दूसरों पर और अन्तत: परमेश्वर पर भरोसा रखना सीखना है। यदि कोई बच्चा अपने माता-पिता पर भरोसा रखना नहीं सीखता तो किसी पर भी भरोसा रखने की क्षमता बुरी तरह प्रभावित होती है।... मानवीय समाज में बच्चों के अपने माता-पिता की आज्ञा मानने की स्वाभाविक आवश्यकता से स्पष्ट और कोई बात नहीं है।

कास्ट ने यह ध्यान दिलाया कि माता-पिता के अपने बच्चों की संभाल करने की ज़िम्मेदारी के प्रति लापरवाही करना बच्चों के अपने माता-पिता की आज्ञा मानने के लिए अपनी ज़िम्मेदारी से बचने की तरह ही रक्षात्मक है। उसने सवाल उठाया कि "कोई किसी की भी आज्ञा क्यों माने?" और उसका उत्तर दिया:

> ... समाज सहकारिता का एक मानवीय प्रयास है और यदि कोई अधिकार का तर्कसंगत ढंग से दूसरों का आदर न करे और उनके साथ न चले तो समाज कैसे काम कर सकता है? जब किसी समाज में बच्चों के लिए अपने माता-पिता की आज्ञा न मानना आम बात हो जाए तो सब इतिहासकार अपने कागज़-कलम निकालकर उस समाज के पतन और ह्रास के बारे में लिखना आरम्भ कर देते हैं।[14]

आज्ञा न मानने वाले बच्चों का समाज पर पड़ने वाला प्रभाव इस्राएलियों को दी गई परमेश्वर की इस चौंकाने वाली व्यवस्था में दिखाई देता है:

> यदि किसी का हठीला और दंगैत बेटा हो, जो अपने माता-पिता की बात न माने, किन्तु ताड़ना देने पर भी उनकी न सुने, तो उसके माता-पिता उसे पकड़कर

> अपने नगर से बाहर फाटक के निकट नगर के सियानों के पास ले जाएं, और वे नगर के सियानों से कहें, कि हमारा यह बेटा हठीला और दंगैत है, यह हमारी नहीं सुनता; यह उड़ाऊ और पियक्कड़ है। तब उस नगर के सब पुरुष उसको पत्थरवाह करके मार डालें, यों तू अपने मध्य में से ऐसी बुराई को दूर करना, तब सारे इस्राएली सुनकर भय खाएंगे (व्यवस्थाविवरण 21:18-21)।

नया नियम (वह वाचा जिसके अधीन हम हैं) हमें बच्चों द्वारा अपने माता-पिता की आज्ञा न मानने पर उन्हें मार डालना नहीं सिखाता, परन्तु पुराना नियम बच्चों के अपने माता-पिता की आज्ञा मानने के महत्व को स्पष्ट रूप से याद दिलाता है।

माता-पिता हमेशा सही नहीं होते, परन्तु यदि वे सचमुच अपने बच्चों की चिन्ता करते हैं तो वे सम्भवतया उतनी गलतियां नहीं करेंगे जितना सही होने का प्रयास करेंगे। हे नवयुवकों, यदि आपके माता-पिता ऐसे हैं, जो आपका इतना ध्यान रखते हैं कि आप पर पाबन्दियां लगाते हैं तो उनके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें!

हम अपनी आज्ञाकारिता के लिए अपने माता-पिता के देनदार हैं।

हमारी समझ

फिर जिन "कर्जों" का मैं उल्लेख करूंगा उनका सम्बन्ध सम्मान, धन्यवाद, आज्ञाकारिता से बहुत निकटता का है; परन्तु उनका महत्व इतना है कि उन पर अलग-अलग चर्चा की जा सकती है। सूची में आगे "समझ" का नाम आता है। हमारे ऊपर अपने माता-पिता को जहां तक हो सके सहानुभूतिपूर्वक समझने की भी ज़िम्मेदारी है।

पिछले एक पाठ में हमने ध्यान दिया था कि पतियों को अपनी पत्नियों के साथ "बुद्धिमानी से" (1 पतरस 3:7) रहने का सुझाव दिया गया था। घर में हर सम्बन्ध के लिए ऐसे रहना कोई बुरी सलाह नहीं है। हमें एक-दूसरे को समझने की कोशिश करनी चाहिए।

मैंने नवयुवकों को चिल्लाते सुना है, "मेरे माता-पिता मुझे समझते ही नहीं हैं।" इनमें से कई जवान लगता है कि इस बात से अनजान हैं कि समझ दोनों तरह से काम करती हैं। यदि आप नवयुवक हैं तो क्या आपने इस सम्भावना पर विचार किया है कि समझ की सबसे बड़ी कमी आप में है? आखिर आपके माता-पिता भी कभी आपकी तरह जवान थे। उन्हें मालूम है कि नवयुवक होना और वयस्क होना दोनों कैसे होते हैं। दूसरी ओर आप केवल यही जानते हैं कि नवयुवक होना कैसा होता है। हो सकता है कि आप चाहते हों कि आपके माता-पिता *आपके* दृष्टिकोण को समझें परन्तु आप *उनके* दृष्टिकोण को समझने के लिए कितना समय दे रहे हैं?

कइयों का कहना है कि नवयुवक होना आज बड़ा कठिन है, और यह है भी सच। नवयुवक बच्चों का पालन पोषण करना भी कठिन है। हे नवयुवको, क्या आपने यह विचार किया है कि आपके माता-पिता बूढ़े हो रहे हैं और उन्हें आराम की आवश्यकता है? क्या आपने उस संकट पर विचार किया है, जिसमें से व्यापार जगत निकल रहा है? क्या आपने

यह विचार किया है कि उनके लिए आज की महंगाई में ''जरूरतें पूरा करना'' कितना कठिन है ? क्या आप जानते हैं कि आपकी माता जीवन के परिवर्तन के आरम्भ में से गुजर रही हो सकती है या आपके पिता ''अधेड़ उम्र के संकट'' का सामना कर रहे हो सकते हैं ?

हमारा सहयोग

हमारा दायित्व है कि हम अपने माता-पिता को जितना सहयोग दे सकें दें। माता-पिता की ज़िम्मेदारियां काफी बड़ी हैं। 1 तीमुथियुस 5:8 कहता है, ''पर यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है।'' इफिसियों 6:4 में पिताओं को अपने बच्चों का पालन-पोषण ''प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए'' करने की आज्ञा दी गई है। परमेश्वर ने माता-पिता को अपने परिवार की शारीरिक और आत्मिक दोनों ज़िम्मेदारियां दी हैं और एक दिन उन्हें अपने भण्डारी होने का हिसाब देना पड़ेगा (1 कुरिन्थियों 4:2)। हम उनके इस बड़े काम को जितना आसान हो सके बना सकते हैं।

शारीरिक चीज़ें उपलब्ध कराने की उनकी ज़िम्मेदारी के सम्बन्ध में हमें हर वह चीज़ न मिलने पर जो हमें पसन्द हो, शिकायत नहीं करनी चाहिए। *आत्मिक* बातें उपलब्ध कराने की उनकी ज़िम्मेदारी के सम्बन्ध में हमें सहयोग देना चाहिए। जब वे ''प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए'' हमारा पालन-पोषण करने की कोशिश करते हैं,[15] तो हमें सीखने को तैयार रहना चाहिए। बुद्धिमान ने लिखा है, ''हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर कान लगा और अपनी माता की शिक्षा को न तज'' (नीतिवचन 1:8, 9)। उसने यह भी कहा :

> हे मेरे पुत्र, मेरी आज्ञा को मान, और अपनी माता की शिक्षा का न तज। इन को अपने सदय में सदा गांठ बान्धे रख; और अपने गले का हार बना ले। वह तेरे चलने में तेरी अगुवाई, और सोते समय तेरी रक्षा, और जागते समय तुझ से बातें करेगी (नीतिवचन 6:20-22)।

अपने माता-पिता की तुलना गहनों से करना यह कहने का उत्कृष्ट ढंग है कि यदि आप उनके निर्देशों को सुनते हैं तो आपका जीवन सुन्दर हो जाएगा।[16]

कई आयतों में ग्रहण करने वाले होने केमहत्व पर ज़ोर दिया गया है: ''हे मेरे पुत्र, मेरे वचन ध्यान करके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा'' (नीतिवचव 4:20);''शिक्षा को पकड़े रह, उसे छोड़ न दे; उसकी रक्षा कर, क्योंकि वही तेरा जीवन है'' (नीतिवचन 4:13)। हे नवयुवको, यदि आपके माता-पिता आपको वह सब सिखाने की कोशिश कर रहे हैं, जो सही है तो आपको उनके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए।

एडवर्ड एच.वाइट 27 जनवरी 1967 के दिन केप कैनेडी में *अपोलो प्रथम* फटने पर मरने वाले तीन खगोलज्ञों में से एक था। मरने से पहले उसने माता-पिता के बारे में यह कहा था:

> जब मैं लड़का था, तो मुझे नहीं लगता कि अधिकतर लड़कों से अधिक विश्वास

में मेरी अधिक रुचि हो। परन्तु मुझे ऐसे माता-पिता मिले, जिन्हें मालूम था कि अपने विश्वास को मेरी समझ के अनुसार शब्दों में कैसे संचारित करना है। मेरा भाई जिम और मेरी बहन जीन और मैं कभी शक नहीं करते थे कि हमारे माता-पिता धर्म के प्रश्न पर कहां खड़े हैं। हमारे घर में बाइबल सेल्फ पर रखने वाली किताब नहीं थी; यह वहां थी जहां इसका इस्तेमाल हो सकता था। कलीसिया हमारे लिए मौसमी बात नहीं थी; रविवार के दिन आराधना के लिए जाना सोमवार के दिन कपड़े धोने की तरह ही जीवन की लय का भाग था।[17]

हमारे माता-पिता का काम ''प्रभु की चेतावनी देते हुए'' हमारा पालन-पोषण करना है। यहां भी हमें सहयोग देना आवश्यक है। ''मूढ़ अपने पिता की शिक्षा का तिरस्कार करता है, परन्तु जो डांट को मानता, वह चतुर हो जाता है'' (नीतिवचन 15:5; 12:1 भी देखें)। जब मेरे माता-पिता मुझे अनुशासित करते थे, यह इसलिए होता था कि वे मुझसे प्रेम करते थे और चाहते थे कि मैं एक मज़बूत मसीही बनने के लिए बड़ा होऊं।

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने लिखा कि ''प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है'' (12:6क)। फिर उसने हमारे स्वर्गीय पिता और हमारे सांसारिक पिताओं में समानता बनाई: ''फिर जबकि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे और हमने उनका आदर किया'' (आयत 9क)। आगे उसने अनुशासन पर यह सामान्य अवलोकन किया: ''वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है [मैं बच्चों और नवयुवकों को ''आमीन'' कहते सुन सकता हूं]; तौ भी जो उसको सहते-सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है'' (आयत 11)।

हे नवयुवकों यदि आपके माता-पिता आपकी इतनी चिन्ता करते हैं कि वे आपको अनुशासन में रखते हैं तो उसके लिए भी परमेश्वर को धन्यवाद दें। हमारा दायित्व है कि हम अपने माता-पिता के साथ सहयोग करें।

हमारी पूरी कोशिश

अपने माता-पिता के प्रति हमारा दायित्व है कि हम जितना हो सके उनके अच्छे बेटे और बेटियां बनें। हम अपने माता-पिता की जितनी भी चापलूसी करें परन्तु यदि हमारा जीवन सही नहीं है तो हम उनका आदर नहीं कर रहे हैं। जब याकूब के लड़कों ने सही काम नहीं किया तो याकूब ने कहा, ''... तुम ने जो उस देश ... मुझे संकट में डाला है, ...'' (उत्पत्ति 34:30; KJV)। ऐसाव के बुरे विवाहों ''के कारण इसहाक और रिबका के मन को खेद हुआ'' (उत्पत्ति 26:35; देखें 27:46)। हमने पहले व्यवस्थाविवरण 21 को उद्धृत किया था। क्या आप उन माता-पिता की पीड़ा को सुन सकते हैं जिन्होंने माना कि ''हमारा यह बेटा हठीला और दंगैत है, यह हमारी नहीं सुनता; यह उड़ाऊ और पियक्कड़ है'' (व्यवस्थाविवरण 21:20ख)?

अपने माता-पिता को सबसे बड़ा सम्मान यदि हम दे सकते हैं तो वह मसीही बनना

अर्थात निजी विश्वास के साथ मसीही बनना और अपनी पूरी कोशिश से मसीही जीवन व्यतीत करना है। हमें जवानी में जितना हो सके उतना अच्छा बनने की कोशिश करनी चाहिए: "लड़का भी अपने कामों से पहिचाना जाता है" (नीतिवचन 20:11क; KJV)। बुढ़ापे में हम जितने अच्छे हो सकते हैं, हमें बनना चाहिए। यदि हमारे माता-पिता मर गए हैं तो भी हमें जितने अच्छे हो सकते हैं, होना चाहिए; हमें उनकी याद के प्रति वफादार रहना चाहिए। यदि हमारे माता-पिता मसीही नहीं हैं (या नहीं थे) तो भी हमें जितना अच्छा हो सकते हैं, होना चाहिए। यदि हमारे माता-पिता अभी हैं और हम उन्हें अपना नमूना देकर जीत सकते हैं तो हमें उन्हें मसीह में लाना चाहिए (1 पतरस 5:1-4)। यदि वे जीवित नहीं हैं तो भी हम जो सच है, उसे जानकर वफादार रह कर उनको सम्मान दे सकते हैं।

हम अपने माता-पिता के साथ जितने अच्छे बन सकते हैं, हमें बनना चाहिए।

हमारा निरन्तर प्रेम

अन्त में, हम उनके जीवनभर अपने माता-पिता को अपना निरन्तर प्रेम और ध्यान देने के देनदार हैं। इस पाठ में, जो सच्चाइयां मैंने बताई हैं, उनमें से कुछ तो घर में रहने वाले बच्चों पर भी लागू होती हैं (और विशेषकर नवयुवाओं पर), उनमें से अधिकतर शिक्षाएं हम सब पर जीवनभर लागू होती हैं। जब तक हम जीवित रहते हैं, हम अपने माता-पिता का धन्यवाद करने, उन्हें सम्मान देने, उन्हें सहानुभूतिपूर्वक समझने और बेहतरीन बेटे-बेटियां बनने के लिए कोशिश करने के देनदार हैं।

हमारी अन्तिम चर्चा मुख्यतया हममें से उनके लिए है, जो बड़े हो चुके हैं। हमें अपने माता-पिता के साथ अपना प्रेम और लगाव मरते दम तक दिखाते रहना और व्यक्त करना आवश्यक है। ऐसा हमें अपनी बातों से करना है, चाहे वे सामने कही गई हो, टेलीविज़न पर हों, या पत्र में लिखी हों। ऐसा हम अपने कामों से भी करते हैं।

इस प्रेम का एक भाग अपने माता-पिता के बूढ़ा होने पर उनकी देखभाल करना है। पहले मैंने 1 तिमुथियुस 5:8 का हवाला दिया था: "यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है।" यह आयत मैंने माता-पिता पर लगाई थी और मेरा मानना है कि इसकी सामान्य प्रासंगिकता बनाई जा सकती है, परन्तु हमें यह समझना चाहिए कि बड़े हो चुके बच्चों को अपने बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल करनी चाहिए।[18]

एक बार जब यीशु सिखा रहा था तो कुछ फरीसी और ग्रंथी उसके पास आकर कहने लगे "तेरे चेले पुरनियों की रीतियों को क्यों टालते हैं? वे बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं!" (मत्ती 15:2क)। यीशु ने उत्तर दिया:

> तुम भी अपनी रीतियों के कारण पमरेश्वर की आज्ञा क्यों टालते हो? क्योंकि परमेश्वर ने कहा था, कि अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, और जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, वह मार डाला जाए। पर तुम कहते हो, यदि

कोई अपने पिता या माता से कहे, जो कुछ तुझे मुझ से लाभ पहुंच सकता था, वह परमेश्वर को अर्पित किया जा चुका है। तो वह अपने माता-पिता का आदर न करे। सो तुमने अपनी रीतियों के कारण परमेश्वर का वचन टाल दिया। हे कपटियो, ... (आयतें 3-7)।

शास्त्रियों और फरीसियों की सोच थी कि वे अपने माता-पिता से यह कहकर कि "जो कुछ तुझे मुझ से लाभ पहुंच सकता था, वह कुरबान अर्थात [परमेश्वर को दिया जा] चुका" (मरकुस 7:11ख) अपने दायित्वों से बच सकते हैं। कुरबान एक इब्रानी शब्द है, जिसका अर्थ है, "जो निकट लाया गया है।" इसका इस्तेमाल भेंट के लिए किया जाता था। मन्दिर के भण्डार को *कोरबनास* कहा जाता था।[19]

इस शब्द [कुरबान] का इस्तेमाल धार्मिक मन्नत करने, गैर ज़िम्मेदार यहूदी अपनी कमाई औपचारिक रूप से परमेश्वर (अर्थात मन्दिर) को दे सकता था, जो उसके माता-पिता की सहायता के लिए दी जा सकती थी। परन्तु उस धन का धार्मिक उद्देश्यों के लिए लिया जाना आवश्यक नहीं था। कुरबान का फॉर्मूला केवल व्यवस्था में अपने माता-पिता के प्रति बताई गई बच्चों की स्पष्ट ज़िम्मेदारी को चकमा देने के लिए था। व्यवस्था के सिखाने वालों का मानना था कि कुरबान की मन्नत को पूरा करना आवश्यक था, चाहे यह उतावली में ही बोल दी गई हो।[20]

यीशु ने मनुष्यों की उस परम्परा का खण्डन किया, क्योंकि व्यक्ति अपने माता-पिता के बूढ़ा होने पर उनकी देखभाल किए बिना उनका "आदर" नहीं कर सकता। बैटसेल बैरेट ने लिखा है:

चाहे जितने भी चर्च जाने वाले हों, चाहे कलीसिया को कितनी भी आर्थिक सहायता करने वाले हों, चाहे कितने भी सदाचारी क्यों न हों, यह सब माता-पिता का आदर करने का बदला नहीं है।

हमारे कथित जागृत युग की एक त्रासदी इस समाज द्वारा माता-पिता को भूल जाने ओर उनकी अवहेलना करने का ढंग है। मेडिकल साइंस ने जीवन की अवधि में इतनी वृद्धि कर दी है कि पैंसठ के ऊपर की उम्र के लोगों की गिनती लगातार बढ़ रही है। मेडिकल साइंस उन नज़रअंदाज़ होने वाले, भुला दिए गए और अकेले छोड़ दिए गए बुज़ुर्गों की मानवीय समस्या का हल नहीं कर सकती। सो इस मानवीय समस्या का हल यीशु मसीह के साथ सम्बन्ध बनाने से हमारे विवेक को जागृत किए जाने से पहले ही हो सकता है।[21]

सारांश

नीतिवचन 28:24 अपने पिता को लूटने को बहुत बड़ा पाप बताता है। हम कहते हैं कि हम ऐसा घोर पाप कभी नहीं करेंगे, परन्तु यदि हम अपने माता-पिता को वह न दें, जो उनका अधिकार है तो? यदि हम उन्हें धन्यवाद, सम्मान, आज्ञाकारिता, सहानुभूतिपूर्वक

समझ और सहयोग न दें तो ? यदि हम उनके जीवनभर उन्हें अपना प्रेम और लगाव न दें ? तो क्या हमने उनसे वह नहीं लूटा है, जो सोने से कहीं अधिक मूल्यवान है ?

आइए पाठों की इस श्रृंखला को इस प्रार्थना के साथ समाप्त करते हैं:

> परमेश्वर, हम परिवार और घर बनाने में तेरी बुद्धि के लिए तेरी महिमा करते हैं। हम उस आशीष के लिए तेरा धन्यवाद करते हैं, जो तू ने हमारे जीवन में दी है। अब हम तुझसे हमें वैसे पति और पिता, पत्नियां और माताएं और बच्चे बनने के लिए सहायता मांगते हैं, जैसे हमें होना चाहिए। अपनी मूर्खता में हम तेरी बुद्धि के सहारे हैं। अपनी अधीरता में हम तेरे धैर्य के सहारे हैं। अपनी निर्बलता में हम तेरे सामर्थ के सहारे हैं। हमारे घरों में तुझे महिमा मिले। यीशु के बहुमूल्य नाम में, आमीन।[22]

टिप्पणियां

[1]इस पाठ को मैं कई बार "सात चीज़ें जो मुझे डैड को देनी हैं" या "सात चीज़ें जो मुझे मॉम को देनी हैं" के रूप में भी पेश करता हूं। [2]इस प्रस्तुति में मुख्य ज़ोर अभी भी घर में रह रहे बच्चों पर है, जो अपने माता-पिता के अधीन हैं। परन्तु पाठ के अन्तिम भाग में, हर उम्र के "बच्चों" पर यह बात लागू की जाएगी। [3]मैं समझता हूं कि कई माता-पिता अपने बच्चों से प्रेम नहीं करते और उनकी परवाह नहीं करते, परन्तु ये कुछ अपवाद हैं। यदि सब नहीं तो आपके सुनने वालों में से अधिकतर के माता-पिता संसार के सबसे अच्छे माता-पिता है (या थे)। [4]इस पाठ का इस्तमोल अमेरिका से बाहर के देशों में किए जाने पर सुनने वालों से जुड़े अलग-अलग उदाहरणों का इस्तेमाल किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, आप कई उदाहरण दे सकते हैं कि आप वहां पढ़ाते हैं, जहां माता-पिता ने अपने बच्चों को उस जगह से बेहतर जगह में रखा है, जहां वे पैदा हुए थे। [5]बैटसैल बैरट बैक्स्टर, *क्राइस्ट एण्ड योर होम* (अबिलेन, टैक्सस: हैरल्ड ऑफ़ ट्रुथ, 1974), 35-36. [6]इस बात का सबसे बड़ा सबूत कि हम में से हर किसी का महत्व है यह तथ्य है कि परमेश्वर हम से प्रेम करता है और उसने हमारे लिए अपने पुत्र को दे दिया। अन्य शब्दों में कोई मनुष्य हमारे लिए धन्यवाद व्यक्त करे या न करे परन्तु हमारा महत्व है। तौ भी बाइबल सिखाती है कि हमें एक-दूसरे को सराहना चाहिए। (उदाहरण के लिए देखें, इफिसियों 1:16; 1 थिस्सलुनीकियों 5:12.) [7]KJV में "भय" है। जैसा कि इस श्रृंखला में हमने कई बार संकेत दिया है "भय" शब्द "गहरे सम्मान, भक्ति" का प्रतीक है। [8]KJV में "setteth light by" है यानी "हल्के (तुच्छ) ढंग से व्यवहार करता" है। [9]वचन में इस बात का संकेत है कि किसी प्रकार हम ने अपने पिता की शराबी अवस्था को हल्के से लिया। [10]एलिएनर रूज़ वेल्ट अमेरिका के बत्तीसवें राष्ट्रपति फ्रैंक्लिन डी. रूज़वेल्ट (1933-45) की पत्नी थी।

[11]बैक्स्टर, 33 द्वारा उद्धृत। [12]वही। [13]वही। [14]वही, 35. [15]अपने बच्चों को सिखाने का मुख्य दायित्व पिताओं का है परन्तु माताएं भी इस काम में भाग ले सकती हैं और उन्हें लेना भी चाहिए। [16]इसका अर्थ यह है कि वे परमेश्वर के वचन के अनुसार ताड़ना करते हैं। आप चाहें तो पाठ में यह बात जोड़ सकते हैं कि हर शिक्षा वचन से मेल खाती होनी चाहिए। [17]बैक्स्टर, 38 में उद्धृत। [18]यह आयत बड़े बच्चों के दूसरे बूढ़ रिश्तेदारों की संभाल करने की भी बात करती है। [19]कोरबनस शब्द का अनुवाद मत्ती 27:6 में "भण्डार" किया गया है। [20]कैनथ एल. बार्कर, सामा. संस्क., *दि एनआईवी स्टडी बाइबल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1507.

[21]बैक्स्टर, 37–38. [22]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो विवाह और घर विषय पर बोलते समय यही मूल निमन्त्रण देता हूं। मैं जब भी घर पर बात करता हूं तो इस बात पर ज़ोर देता हूं कि यह *मसीही* घर होना चाहिए, जिसका अर्थ यह है कि घर के हर सदस्य को विश्वासी मसीही होना चाहिए। फिर मैं सबको बताता हूं कि मसीही कैसे बनना है या घर वापस कैसे आना है और फिर उन्हें वचन को मानने के लिए कहता हूं।